



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 155]
No. 155]नई दिल्ली, मंगलवार, जून 25, 2002/आषाढ़ 4, 1924
NEW DELHI, TUESDAY, JUNE 25, 2002/ASADHA 4, 1924

बाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(बाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 21 जून, 2002

विषय : चीन जनवादी गणराज्य के मूल के अथवा वहाँ से निर्यात किए गए डाइक्लोफिनाक सोडियम के आवारों के संबंध में पाटनरोधी जांच-अंतिम निष्कर्ष

सं. 44/1/2001-डीजीएडी.—1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और

सीमाशुल्क टैरिफ (पाठित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए:

क. कार्य पद्धति :

जांच के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है:-

(i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को उपरोक्त नियमरपजह के अधीन घरेलू उद्योग की ओर से मै0 आरती ड्रग्स लि�0, मै0 आमोली आर्गेनिक्स लि�0 और मै0 कैरव कैमिकल्स से लिखित याचिका प्राप्त हुई है, जिसमें चीन जनवादी गणराज्य (जिन्हें इसके बाद संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यात किए गए डाइक्लोफिनाक सोडियम(जिसे इसके बाद संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाठन का आरोप लगाया गया है।

(ii) प्राधिकारी ने उक्त नियम-5 के उप-नियम (5) के अनुसार जांच शुरू करने से पहले याचिकाकर्ताओं द्वारा दिए गए निवेदन के प्राप्त होने की सूचना भारत स्थित चीनी दूतावास को दी ;

- (iii) प्राधिकारी ने अपने समक्ष उपलब्ध सूचना और साक्ष्य के आधार पर सम्बद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तु के आयातों के विरुद्ध पाटनरोधी जांच आरंभ करने का मिर्णय लिया ।
- (iv) प्राधिकारी द्वारा भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 1 सितम्बर, 2001 की सार्वजनिक सूचना जारी की गई जो सम्बद्ध देशों से सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची-1 के अध्याय शीर्ष 2942 के अंतर्गत आने वाली सम्बद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच आरंभ करने के बारे में थी ;
- (v) प्राधिकारी ने चीन से सम्बद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच के बारे में दिनांक 31.10.2001 की अधिसूचना द्वारा प्रारंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित किया और हितबद्ध पक्षों से अपने विचार लिखित रूप में इसके प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनों के भीतर देने का अनुरोध किया ।
- (vi) प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों की एक प्रति ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को भेजी और उनसे प्रारंभिक निष्कर्षों के बारे में अपने विचार यदि कोई हों, इसके प्रकाशित होने की तारीख के चालीस दिनों के भीतर देने का अनुरोध किया ।
- (vii) प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों की एक प्रति नई दिल्ली स्थित चीन के दूतावास को इस अनुरोध के साथ भिजवाई कि वे अपने देश के निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पार्टियों के उपरोक्त (v) और (vi) में बताई गई समय सीमा के अन्दर प्रारंभिक निष्कर्षों के बारे में अपने विचार देने की सलाह दें ;
- (viii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों को 4.3.2002 को अपने विचार मौखिक रूप से देने का अवसर प्रदान किया । विचार व्यक्त करने वाली सभी पार्टियों को अपने विचार लिखित में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया । पार्टियों को विपक्षी पार्टियों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की प्रतियां प्राप्त करने का उनका खण्डन, यदि कोई हो, भिजवाने की सलाह दी गई ।
- (ix) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों वाली फाइल सार्वजनिक फाइल के रूप में सभी हितबद्ध पार्टियों को उनके अनुरोध पर उपलब्ध कराई ।
- (x) प्रारंभिक निष्कर्षों की घोषणा से पहले हितबद्ध पार्टियों द्वारा उठाए गए जिन तर्कों को अधिसूचित किए गए प्रारंभिक निष्कर्षों में शामिल किया गया है, उन्हें संक्षिप्तता के कारण इसमें

दोहराया नहीं गया है। तथापि हितबद्ध पार्टियों द्वारा बाद में उठाए गए तकँ पर इन निष्कर्षों में उचित स्थान पर विचार किया गया है ;

(xi) उपरोक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों/आधार का खुलासा सभी ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को किया गया था और उन पर मिली टिप्पणियों पर भी इन निष्कर्षों में विधिवत विचार किया गया है ;

(xii) जांच में शामिल अवधि 1 जनवरी, 2001 से 31 अगस्त, 2001(आठ माह) है।

(xiii) इस अधिसूचना में *** किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमों के अधीन उसे वैसा ही माना है।

(ख) याचिकाकर्त्ताओं, निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार और प्राधिकारी द्वारा उनकी जांच।

3. विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों पर प्रारंभिक निष्कर्षों में और प्रकटन विवरण पत्र में भी चर्चा की गई है। जिन विचारों पर प्रारंभिक निष्कर्षों में और प्रकटन विवरण-पत्र में पहले विचार नहीं किया गया है और जो मुद्दे अब प्रकटन विवरण के जवाब में उठाए गए हैं, उन पर नीचे दिए गए संगत पैराग्राफों में उस सीमा तक विचार किया गया है जहां तक वे नियमानुसार संगत हैं और जहां तक वे इस मामले पर प्रभाव छालते हैं। हितबद्ध पार्टियों द्वारा उठाए गए तकँ की जांच की गई है, विचार किया गया है और जहां कहीं उचित समझा गया है, नीचे संगत पैराग्राफों में उन पर कार्यवाही की गई है। प्राधिकारी निर्यातकों द्वारा निर्धारित रीति और विधि से कोई उत्तर नहीं दिए जाने और उपरोक्त नियम 6(8) के अनुसार अपने पास उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर जांच परिणाम तैयार करने की पुष्टि करते हैं।

ग) विचाराधीन उत्पाद और समान घस्तु:

4. मौजूदा जांच में विचाराधीन उत्पाद 2-{c2.,6- डाइक्लोरोफिनाइल), अमीनो} बैंजीन एसीटिक एसिड मोनो सोडियम साल्ट, { 0-(2,6-डाइक्लोरोएनीलीनो)फिनाइल एसीटिक एसिड सोडियम साल्ट है, जो सामान्यतया डिक्लोफीनाक सोडियम के नाम से जाना जाता है। इसका रासायनिक सूत्र C14H10C12NnaO2 है। डीएफएस सफेद अथवा हल्का सा पीले रंग का खेवर पाउडर है, मामूली आद्रता अवशोषी स्वरूप का है तथा जल में बहुत ही कम घुलनशील होता है।

इसका प्रयोग प्रवाहकरोधी तथा पीड़िनाशक औषधि के रूप में किया जाता है। डिक्लोफिनाक सोडियम के सभी प्रकारों को अध्याय शीर्ष 2942 के तहत वर्गीकृत किया गया है। यह जांच विचाराधीन उत्पाद के बारे में है जिसमें आयात संबंधी वर्गीकरण पर ध्यान नहीं दिया गया है। सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और भौजूदा जांच के दायरे पर किसी प्रकार से बाध्यकारी नहीं है।

5. समान वस्तु

घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तुओं तथा चीन से आयातित वस्तुओं में भौतिक तथा रासायनिक विशिष्टियों, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्दिष्टताओं, कीमत निर्धारण, वितरण तथा विपणन और वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशिष्टियों के अनुसार अत्यधिक समानता है। यह दोनों तकनीकी तथा वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय है। भारतीय उपभोक्ताओं ने इन दोनों का प्रयोग एक दूसरे के बदले में किया है। अतः प्राधिकारी का निर्णय है कि याचिकाकर्त्ताओं द्वारा उत्पादित वस्तुएं नियमों के अर्थ के भीतर चीन से आयातित सम्बद्ध वस्तु के "समान वस्तु" हैं।

घ. घरेलू उद्योग

6. पाटनरोधी नियमों के नियम 2(ख) के अनुसार, "घरेलू उद्योग का अभिप्राय उन समस्त घरेलू उत्पादकों से हैं जो समान वस्तु के विनिर्माण और किसी सम्बद्ध कार्यकलाप में लगे हैं अथवा जिनका उक्त वस्तु सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का अधिकांश हिस्सा हो जिनमें ऐसे उत्पादक शामिल नहीं हैं जो कथित पाटित वस्तु के निर्यातिकों अथवा आयातकों से सम्बद्ध हों या उसके स्वयं आयातक हों तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों, को घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं समझा जाएगा।"

ऊपर दी गई घरेलू उद्योग की परिभाषा को डब्ल्यू टी ओ पाटनरोधी परिभाषा को डब्ल्यू टी ओ पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 5.4 द्वारा अधिक स्पष्ट किया गया है जो निम्न प्रकार है:-

".....आवेदन को "घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से प्रस्तुत किया गया तब माना जाएगा यदि इसका समर्थन उन घरेलू उत्पादकों द्वारा किया गया हो, जिनका संचयी उत्पादन उक्त आवेदन का समर्थन अथवा विरोध, करने वाले घरेलू उद्योग के उस भाग द्वारा उत्पादित समान उत्पाद के कुल उत्पादन के पचास प्रतिशत से अधिक बनता हो। तथापि, उस स्थिति में कोई जांच

शुरू नहीं की जाएगी जब आवेदन का स्पष्ट रूप से समर्थन करने वाले घरेलू उत्पादकों का उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान उत्पाद के कुल उत्पादन के 25 % से कम बनता हो ।¹

यह याचिका घरेलू उद्योग की ओर से मै0 आरटी ड्रग्स लि0, मै0 अमोली आर्गेनिक्स लि0 और मै0 कैरव कैमिकल्स लि0, द्वारा दायर की गई है । अतः प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि याचिकाकर्त्ताओं का उत्पादन घरेलू उद्योग के उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है इसलिए उनके पास उक्त नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर करने का आधार है ।

ड. पाटन :

7. **सामान्य मूल्य:** जैसा कि प्राथमिक जांच परिणामों में प्रकाशित किया गया है, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन में संबद्ध वस्तु के ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी । प्राधिकारी ने भारत स्थित चीन दूतावास को भी लिखा जिसमें उनसे यह अनुरोध किया गया था कि वे चीन के निर्यातकों से प्राधिकारी को उत्तर देने के लिए कहें । तथापि, चीन के किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया और कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की । इस प्रकार इस मामले में चीन के निर्यातकों ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के साथ असहयोग न करने को ही प्राथमिकता दी । इस प्रकार नियम 6(8) को लागू किया जाता है और निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर कार्रवाई करना पूरी तरह से औचित्यपूर्ण है । इस प्रकार प्राधिकारी यह मानते हैं कि नियमों के अंतर्गत की गई व्यवस्था के अनुसार चीन के किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया है । घरेलू उद्योग ने उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर चीन में सामान्य मूल्य के बारे में सूचना प्रस्तुत की है । चीन के निर्यातकों द्वारा असहयोग को देखते हुए प्राधिकारी ने उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है ।

8. **निर्यात कीमत:** चीन से डिक्लोफिनाक सोडियम का भारी निर्यात हाल ही में शुरू हुआ है । सीमा शुल्क वर्गीकरण के अंतर्गत डिक्लोफेनाक सोडियम के लिए अलग से कोई अनन्य कोड नहीं है । जांचाधीन उत्पाद के लिए डीजीसीआईएंडएस द्वारा संकलित आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं । इस स्थिति को देखते हुए सीमाशुल्क दैनिक सूचियों और सीमाशुल्क आयुक्त से प्राप्त सूचना से आंकड़े संकलित किए गए हैं । अतः निर्यात कीमत की सीआईएफ स्तर पर गणना की गई है । इसके

अलावा घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए साक्ष्य के आधार पर निबल निर्यात कीमत निकालने के लिए समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, कमीशन, पत्तन हैंडलिंग का समायोजन किया गया है।

9. पाटन मार्जिन: सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम और पाटनरोधी नियमों में यथानिर्धारित सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के निर्धारण को शासित करने वाले सिद्धांत नियमों के अनुबंध I में विस्तार से दिए गए हैं। उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर चीन के लिए सामान्य मूल्य ***** अमरीकी डालर प्रति किग्रा 0 बनती है। इन्हीं मापदण्डों के आधार पर निकाली गई निबल निर्यात कीमत और अनुमत्य समायोजन ***** अमरीकी डालर प्रति किग्रा 0 बनते हैं। चीन से संबद्ध वस्तु के निर्यात के लिए पाटन मार्जिन निर्यात कीमत का 68 % बनता है।

च. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

10. प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण करते समय क्षति से संबंधित सभी संकेतकों को ध्यान में रखा। इसमें शामिल हैं - सभी संगत मापदण्ड अर्थात् नियमावली के अनुबंध II पैरा 4 में उल्लिखित मापदण्डों के अनुसार पाटित आयातों की मात्रा तथा घरेलू बाजार में कीमतों पर उनका प्रभाव और घरेलू उत्पादकों पर उनका परिणामी प्रभाव जैसेकि बिक्रियों लाभ, उत्पादन बाजार के हिस्से, उत्पादकता, निवेशों पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट ; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकदी के प्रवाह, भण्डार रोजगार, मजदूरी, विकास, पूंजी निवेश को जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक इत्यादि। घरेलू उद्योग के लिए समान वस्तु की क्षतिरहित कीमत का निर्धारण करते समय प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान खपत संबंधी सर्वोत्तम मानदण्डों और कच्ची सामग्री, जिनका जांचाधीन उत्पाद के उत्पादन में उपयोग किया जाता है, की वास्तविक कीमत को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग के लिए उत्पादन की इष्टतम लागत पर विचार किया है। क्षति मार्जिन निकालते समय भी निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उचित बिक्री अथवा क्षतिरहित कीमत निकालने के लिए इष्टतम क्षमता उपयोग को ध्यान में रखा है। प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले विभिन्न मापदण्डों का विश्लेषण तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष के संदर्भ में जांच अवधि विशेष रूप से तब जब आयात जांच अवधि में ही शुरु हुए हों, में निष्पादन की तुलना द्वारा करना अधिक उचित होगा।

11. उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर निम्नलिखित मापदण्ड चीन से हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी प्रदर्शित करते हैं :-

(क) संबद्ध देशों से आयात जो जांच अवधि के शुरू होने से पहले तक शून्य थे जांच अवधि में पर्याप्ततः बढ़कर लगभग 60.77 मी० टन के हो गए। जांच अवधि से पहले संबद्ध वस्तु कोई आयात नहीं हुआ था।

(ख) भारत में संबद्ध वस्तु की कुल मांग में चीन से हुए आयातों के हिस्से उस अत्य अवधि के मद्देनजर पर्याप्त वृद्धि हुई है, जिसमें आयात हुए थे।

(ग) घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्रियों और क्षमता उपयोग में गिरावट आई थी। यद्यपि घरेलू उद्योग का उत्पादन 98-99 में 377 मी० टन से बढ़कर जांच अवधि में 434मी० टन वार्षिक हो गया, तथापि इसमें जांच अवधि में 1999-00 तथा 2000-01 (क्रमशः 582 मी० टन और 537मी० टन) की तुलना में गिरावट आई।

घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग 1998-99 में 59.9% से घटकर जांच अवधि में 53.62 % हो गया। यह गिरावट वर्ष 1999 और 2000-01 (क्रमशः 71.8 % और 66.3 %) की तुलना में काफी अधिक है। यद्यपि उत्पादन में 1998-99 की तुलना में जांच अवधि में वृद्धि प्रदर्शित होती है तथापि यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग ने 1998-99 तुलना में वर्ष 1999-2000 में क्षमता में 28 % की वृद्धि की है।

(घ) बिक्री कीमतों में गिरावट आई है जो सर्स्ते आयातों के कारण जांच अवधि के अन्त में अधिक हो गई है। सूचकांकित आधार पर घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत वर्ष 1998-99 में 100 % से गिरकर 87 % (जांच अवधि में) हो गई।

(ङ.) प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यद्यपि उत्पादन लागत में भी कमी 5 प्रतिशत तक कमी आई है, तथापि बिक्री कीमत में कमी उत्पादन लागत में आई कमी से ज्यादा है।

(च) आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू बाजार की बिक्री कीमतों से काफी कम था जिसके परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमत में भारी कटौती की गई। जांच अवधि में कीमत में कटौती का स्तर 23 % से 34 % के बीच रहा था। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कीमत में अत्यधिक कटौती को बिक्री कीमतों में आई कमी के साथ देखा जाना है।

(छ) जिस कीमत पर घरेलू उद्योग को अपने उत्पाद बेचने के लिए बाध्य किया गया है उससे उत्पादन की पूरी लागत की प्राप्ति नहीं हो सकती है जिसके कारण घरेलू उद्योग को वित्तीय घटा हुआ है ।

(ज) आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत तथा क्षतिरहित कीमत से काफी कम था जिसके परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमत में कमी/हास हुआ ।

(झ) घरेलू उद्योग की लाभप्रदता प्रभावित हुई है । घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत उत्पादन लगात की तुलना में लगभग 14 % कम थी ।

12. कारणात्मक संबंध - यह निर्धारण करने के लिए कि क्या घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई थी, प्राधिकारी ने निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखा -

(i) पाटित कीमतों पर चीन से संबद्ध वस्तु के अत्यधिक आयातों से घरेलू उद्योग को अपनी बिक्री कीमतें अलाभकारी स्तर तक घटाने के लिए बाध्य किया जिसके कारण भारतीय बाजार में मूल्य में कटौती की स्थिति पैदा हुई है ।

(ii) चीन से आयातों ने भारतीय बाजार में उत्पाद के मूल्यों को इस सीमा तक दमन किया कि घरेलू उद्योग भारत में अपने पूरे उत्पादन खर्च को प्राप्त करने तथा संबद्ध वस्तुओं की बिक्री से उचित लाभ कमाने से भी वंचित हो गया ।

(iii) चीन से हुए आयातों ने बहुत ही कम अवधि में पर्याप्त बाजार हिस्सा प्राप्त कर लिया है । इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग ने अपना पर्याप्त बाजार हिस्सा गंवा दिया । घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आई कमी के परिणामस्वरूप उनकी बिक्रियों में कमी आई और इस प्रकार उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में भी कमी आई ।

(iv) चीन से हुए आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम था । इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग कीमत में भारी कमी करने के लिए बाध्य हुआ था ।

(v) चीन से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग अपने उत्पाद को उत्पादन लागत तथा क्षतिरहित कीमत से कम मूल्य पर बेचने के लिए बाध्य हुआ था ।

(vi) आयातों से घरेलू उद्योग ने जिस कीमत कटौती का सामना किया है, उसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है ।

(vii) अन्य देशों से संबद्ध वस्तु का कोई ज्ञात आयात नहीं हुआ है । उत्पाद की मांग में गिरावट का रुख प्रदर्शित नहीं हुआ है । इसके अतिरिक्त, किसी भी हितबद्ध पार्टी द्वारा प्रौद्योगिकीय उन्नयन इत्यादि के संबंध में कोई तर्क नहीं दिया गया है ।

13. इतनी कम कीमत पर जो कि उत्पादन की पूरी लागत प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है, चीन से संबद्ध वस्तु के आयातों में हुई पर्याप्त वृद्धि जिसके कारण कीमत में भारी कटौती हुई है, से स्पष्टः बहुत ही कम अवधि में चीन से संबंध वस्तु के पाटन से घरेलू उद्योग को पहले हो चुकी क्षति तथा उसे आगे और क्षति के खतरे के बीच कारणात्मक संबंध की पुष्टि होती है । इसलिए प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणाम में अपने इस निष्कर्ष की पुष्टि करते हैं कि चीन से संबद्ध वस्तु के पाटन तथा जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को हो रही क्षति के बीच स्पष्ट कारणात्मक संबंध है ।

छ. भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे :

14. कुछेक आयातकों तथा उपयोगकर्ताओं द्वारा यह तर्क दिया गया है कि पाटनरोधी शुल्क लगाते समय डाईक्लोफेनाक सोडियम के उपयोगकर्ताओं के हित को ध्यान में रखा जाना चाहिए । उन्होंने चीनी डाइक्लोफेनाक सोडियम पर पाटनरोधी शुल्क के लगाने पर पुर्नविचार करने का अनुरोध किया है क्योंकि आयातों का खतरा स्थानीय उत्पादनकर्ताओं की कीमतों पर रोक का कार्य करता है ।

15. इस संदर्भ में, प्राधिकारी अपने प्रारंभिक जांच परिणामों के पैराग्राफ 18 तथा 19 को दोहराते हैं जिनमें यह बताया गया है कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्य तौर पर ऐसे पाटन को समाप्त करना है जो कि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहा है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली तथा उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल करना है जो कि देश के सामान्य हित में है । प्राधिकारी यह स्वीकार करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से डाईक्लोफेनाक सोडियम के प्रयोग से विनिर्भीत उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है । तथापि, पाटनरोधी उपायों द्वारा भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी । इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त किए गए अनुचित लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त किए गए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का हास रुकेगा तथा संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प की उपलब्धता को बनाए रखने में सहायता मिलेगी । प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों को लगा करने से चीन जन0 गण0

से आयात किसी भी प्रकार प्रतिबंधित नहीं होंगे तथा इसलिए इससे उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। उपभोक्ता अभी भी आपूर्ति के दो अथवा इससे अधिक स्रोतों को बनाए रख सकते हैं।

16. स्पष्ट रूप से, पाटनरोधी शुल्क को लगाने से भारत में डाईक्लोफेनाक सोडियम के उपभोक्ताओं/उपयोगकर्ताओं पर अंततोगत्वा विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा। बल्कि इससे घरेलू उद्योग को बचाए रखा जा सकेगा तथा भारत में उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रह सकेंगे। पाटनरोधी शुल्क को लगाने का मुख्य उद्देश्य भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पैदा करना है जिसमें घरेलू तथा विदेशी दोनों उत्पादनकर्ता प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। पाटनरोधी शुल्क को लगाने से आयात किसी भी प्रकार प्रतिबंधित नहीं होंगे।

ज. अंतिम जांच परिणाम :

17. पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि:-

- (i) चीन से डाईक्लोफेनाक सोडियम का भारत को निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है।
- (ii) भारतीय उद्योग को क्षति हुई है ;
- (iii) उक्त क्षति चीन से पाटित आयातों के कारण हुई है।

18. प्राधिकारी पाटन मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने का प्रस्ताव करते हैं जिसे यदि लगाया जाता है तो उससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो जाएगी। क्षति के निर्धारण के उद्देश्य से आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित याचिकाकर्ता कंपनियों को क्षतिरहित बिक्री कीमत के साथ करने का प्रस्ताव है। इस उद्देश्य के लिए आयातों के पहुंच मूल्य का निर्धारण सीमा-शुल्क विभाग द्वारा सीमा-शुल्क अधिनियम, 1962 के तहत यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य के रूप में किया गया है और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क 8ख, 9 तथा 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के सीमाशुल्क शामिल हैं।

19. प्राधिकारी सीमाशुल्क शीर्ष 2942 के अंतर्गत आने वाले चीन जनवादी गणराज्य से डाईक्लोफेनाक सोडियम के सभी आयातों पर 3.06 अमरीकी डालर प्रति किग्रा० का निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं।

20. उपरोक्त के अधीन रहते हुए प्राधिकारी दिनांक 31 अक्टूबर, 2001 के प्रारंभिक जाव परिणाम की पुष्टि करते हैं।

21. इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील उपरोक्त अधिनियम के अनुसार सीमा-शुल्क उत्पाद शुल्क तथा स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर की जा सकेगी।

एल. बी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(Directorate General of Anti-dumping and Allied Duties)

NOTIFICATION

New Delhi, the 21st June, 2002

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Diclofenac Sodium originating in or exported from China PR—Final Findings.

No. 44/1/2001-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof.

A. PROCEDURE:

2. The procedure described below has been followed with regard to the investigations:-

- (i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s. Aarti Drugs Ltd., M/s. Amoli Organics Ltd. & M/s. Kairav Chemicals on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Diclofenac Sodium (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from China (hereinafter referred to as subject country);
- (ii) The Authority notified the Embassy of China in India about the receipt of petition made by the petitioners before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub rule (5) of Rule 5 supra;

- (iii) The Authority on the basis of information and evidence available before it decided to initiate anti dumping investigations against imports of subject goods from the subject country;
- (iv) The Authority issued a Public Notice dated the 1st September, 2001 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping investigations concerning imports of subject goods from subject country, falling under Chapter Heading 2942 of Schedule I of the Customs Tariff Act.
- (v) The Authority notified preliminary findings vide notification dated 31.10.2001 on anti-dumping investigation concerning imports of subject goods from China and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication;
- (vi) The Authority forwarded a copy of the preliminary findings to the known interested parties, who were requested to furnish their views, if any, on the preliminary findings within forty days from the date of its publication;
- (vii) The Authority also forwarded a copy of the preliminary findings to the Embassy of China in New Delhi with a request that the exporters and other interested parties may be advised to furnish their views on the preliminary findings in the time frame as stipulated in (v) and (vi) above.

- (viii) The Authority provided an opportunity to the interested parties to present their views orally on 04.03.2002. All parties presenting views were requested to file written submissions of their views expressed. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rebuttals, if any;
- (ix) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of evidence submitted by various interested parties for inspection, upon request;
- (x) Arguments made by the interested parties before announcing the preliminary findings, which have been brought out in the preliminary findings notified have not been repeated herein for sake of brevity. However, the arguments raised by the interested parties subsequently have been appropriately dealt in these findings;
- (xi) In accordance with Rule 16 of the Rules *supra*, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same have also been duly considered in these findings;
- (xii) The investigation covered the period from 1st January, 2001 to 31st August, 2001 (eight months).
- (xiii) ***** in this notification represents information furnished by the interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

B. VIEWS OF PETITIONERS, EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES AND EXAMINATION BY AUTHORITY:

3. The views expressed by various interested parties have been discussed in the preliminary findings and also in the disclosure statement. The views which have not been discussed earlier in the preliminary findings and disclosure statement and those now raised in response to the disclosure statement are discussed in the relevant paragraphs herein below to the extent these are relevant as per rules and have a bearing upon the case. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in the relevant paragraphs herein below. The Authority confirms, the absence of any response from the exporters in the form and manner prescribed and having made the findings on the basis of the best information available to it as per rule 6(8) supra.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE :

4. Product under consideration in the present investigations is 2-[(2,6-Dichlorophenyl), Amino] Benzene Acetic Acid Mono Sodium Salt; [0-(2,6- Dichloroanilino) Phenyl Acetic Acid Sodium Salt, generally known as Diclofenac Sodium. Its chemical formula is C₁₄H₁₀Cl₂NnaO₂. DFS is white or slightly yellowish crystalline powder, slightly hygroscopic in nature and sparingly soluble in water. This is used as anti inflammatory and analgesic drug. All types of Diclofenac Sodium are classified in Chapter heading 2942. The

investigations are against the product under consideration irrespective of the classification under which they are imported. Customs classifications are indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigation.

5. **Like Article:** The subject goods produced by the domestic industry and imported from China closely resemble in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The Indian consumers have used the two interchangeably. Authority, therefore, determines that goods produced by the petitioners is a 'like article' to the subject goods imported from China within the meaning of the Rules.

D. DOMESTIC INDUSTRY:

6. As per Rule 2(b) of the Anti Dumping Rules, "domestic industry means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry."

The definition of domestic industry given above is further clarified by Article 5.4 of WTO Anti Dumping Agreement which reads as follows:

“.....The application shall be considered to have been made ‘by or on behalf of the domestic industry’ if it is supported by those domestic producers whose collective output constitutes more than fifty percent of the total production of the like product produced by that portion of the domestic industry expressing either support for or opposition to the application. However, no investigation shall be initiated when domestic producers expressly supporting the application account for less than 25% of the total production of the like product produced by the domestic industry.”

The petition has been filed by M/s. Aarti Drugs Ltd., M/s. Amoli Organics Ltd. & M/s. Kairav Chemicals Ltd., on behalf of the domestic industry. Authority, therefore, has determined that the petitioners account for a major proportion of domestic industry and therefore have a standing to file the petition on behalf of domestic industry under the Rules above said.

E. DUMPING :

7. **Normal Value :** As brought out in the preliminary findings, the Designated Authority sent questionnaires to known exporters of the subject goods in China. The Authority wrote to the Embassy of China in India also with a request to advise the exporters from China to respond to the Authority. However, none of the exporters from China responded to the Authority and have not furnished any information. Thus the exporters from China have preferred non-cooperation with the Designated Authority in this case. Thus Rule 6(8) is attracted and the Designated Authority is fully justified in proceeding with the best

information available. The Authority, therefore, holds that none of the exporters from China have cooperated with the Authority as envisaged under the Rules. The domestic industry has furnished information with regard to the normal value in China based on the constructed cost of production. In view of non-cooperation from the exporters from China, the Authority has determined normal value in China on the basis of the constructed cost of production.

8. **Export Price:** Large exports of Diclofenac Sodium from China have started very recently. There is no separate dedicated code for Diclofenac Sodium under the Customs Classification. Data compiled by the DGCI&S is not available for the product under consideration. In view of the same, the data has been compiled from Customs Daily Lists and information received from the Commissioner of Customs. The export price is, therefore, calculated at CIF level. Further, adjustments has been made on account of ocean freight, marine insurance, commission, port handling to arrive at net export price on the basis of evidence provided by domestic industry.
9. **Dumping Margin:** The principles governing the determination of normal value, export price and the dumping margin as laid down in the Custom Tariff Act and the Anti Dumping Rules are elaborated in Annexure-I to the Rules. The normal value for China based on constructed cost of production works out to US\$ ***** per Kg. The net export price worked out on the basis of similar parameters and allowing adjustments works out to US\$ ***** per Kg. The dumping margin for exports of the subject goods from China comes to 68% of the export price.

F. INJURY AND CAUSAL LINK :

10. The Authority took into account all indices regarding injury while doing the final determination. This involved all relevant parameters viz., volume of dumped imports and their effect on price in the domestic market and its consequent effect on domestic producers in terms of parameters mentioned in Annexure II para 4 of the Rules such as natural and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments etc. While determining the non-injurious price for the like article for the domestic industry, the Authority considered the optimum cost of production for the domestic industry taking into account the normated best consumption norms and the actual price of the raw materials during the POI which went into the production of the product under consideration. Also, while arriving at the injury margin, the Designated Authority took into account optimum capacity utilization for arriving at a fair selling or non-injurious price. Authority also holds that analysis of various parameters affecting domestic industry would be more appropriate by comparing performance in the investigation period with reference to immediate preceding years, particularly when the imports have started in the investigation period itself.
11. On the basis of the evidence available, the following parameters show existence of injury to the domestic industry caused by dumped imports from China :-

- a. Imports from the subject countries increased significantly from nil till before the beginning of the investigation period to about 60.77 MT in the investigation period. There were no imports of the subject goods prior to the investigation period.
- b. The share of the imports from China in total demand of the subject goods in India increased significantly considering the short period in which the imports have taken place.
- c. There was decline in production, sales and capacity utilization of the domestic industry. Though the production of the domestic industry increased from 377 MT in 98-99 to 434 MT in the investigation period (on annualized basis), the same declined in the investigation period when compared to 1999-00 and 2000-01 (582 MT and 537 MT respectively).

The capacity utilization of the domestic industry declined from 59.9% in 1998-99 to 53.62% in the investigation period. The decline is more significant as compared to 1999-00 and 2000-01 (71.8% and 66.3% respectively).

Even though production show increase in the investigation period as compared to 1998-99, it is found that the domestic industry has enhanced capacity in 1999-2000 as compared to 1998-99 by 28%.

- d. There has been a decline in the selling prices, which is more prominent towards the end of the period of investigation on account of the cheap imports. Selling price of the domestic industry on indexed basis declined from 100 in 1998-99 to 87% (in the investigation period).

- e. The Authority notes that even though the cost of production has also declined (by 5%), the decline in selling price is more than the decline in the cost of production.
 - f. The landed value of imports was significantly below the selling prices of the domestic industry, resulting in significant price undercutting in the Indian market. The level of price undercutting varied between 23% to 34% in the investigation period. Further, the Authority notes that the significant price undercutting has to be seen alongwith the decline in the selling prices.
 - g. The price at which the domestic industry has been forced to sell did not permit recovery of full cost of production, causing financial losses to the domestic industry.
 - h. The landed value of imports was significantly below the cost of production and non-injurious price of the domestic industry causing price suppression/depression in the Indian market.
 - i. Profitability of the domestic industry has been affected. The selling price of the domestic industry was about 14% lower as compared to cost of production.
- 12. Causal Link :** In determining whether material injury to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority took into account the following facts:-
- (i) Substantial imports of subject goods from China at dumped prices forced the domestic industry to reduce its selling prices to unremunerative level which has resulted in a situation of price undercutting in the Indian market.

- (ii) The imports from China suppressed the prices of the product in the Indian market to such an extent that the domestic industry was prevented from recovering its full cost of production and earn a reasonable profit from the sale of subject goods in India.
- (iii) The imports from China have taken over significant market share in a very short period. As a direct consequence, the domestic industry lost significant market share. The decline in the market share of the domestic industry resulted in decline in their sales and hence production and capacity utilization.
- (iv) The landed price of imports from China was below the selling price of the domestic industry. As a direct consequence, the domestic industry was forced to significantly reduce the prices.
- v) The imports from China forced the domestic industry to sell the product at prices below its cost of production and non-injurious price.
- vi) The price undercutting which the domestic industry has faced from the imports has directly resulted in significant increase in the imports.
- vii) There are no known imports of the subject goods from other countries. Demand of the product has not shown a declining trend. Further, no arguments with regard to technological upgradation, etc. have been brought out by any opposing interested party.
13. The substantial increase in import of subject goods from China at low price which is not sufficient to recover full cost of production resulting in severe price undercutting clearly establishes the causal

link between the injury already suffered as well as threat of further injury being faced by the domestic industry with the phenomena of dumping of subject goods from China in a very short period. The Authority, therefore, confirms its conclusion in preliminary findings that there is an obvious causal link between the dumping of subject goods from China and the injury being caused to the domestic industry during the period of investigation.

G. INTEREST OF INDIAN INDUSTRY AND OTHER ISSUES :

14. It has been argued by some of the importers and users that the interest of the users of Diclofenac Sodium should be taken into account while imposing anti dumping duty. They have requested to reconsider the imposition of anti dumping duty on Chinese Diclofenac Sodium since the threat of imports serves as a check on the prices of the local producers.
15. In this context the Authority reiterates paragraphs 18 and 19 of its preliminary findings wherein it is stated that the purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market which is in the general interest of the country. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using Diclofenac Sodium and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by

dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from China PR in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

16. Evidently, imposition of anti dumping duty would not adversely affect the consumers/users of Diclofenac Sodium in India in the long run. It would rather lead to survival of domestic industry and keep wider choice to the consumers in India. The very purpose of the imposition of anti dumping duty is to create situation of fair competition in the Indian market in which both domestic producers and foreign producers can compete. Imposition of anti dumping duty would not lead to restriction on imports in any way.

H. FINAL FINDINGS :

17. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that :
 - (i) Diclofenac Sodium has been exported to India from China below its normal value;
 - (ii) The Indian industry has suffered injury;
 - (iii) The injury has been caused by the dumped imports from China;

18. The Authority proposes to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury, the landed price of imports is proposed to be compared with the non injurious selling price of the petitioner companies determined for the period of investigation. Landed value of imports for the purpose has been determined as the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.
19. The Authority recommends imposition of definitive anti dumping duty of US\$ 3.06 per/kg on all imports from Peoples' Republic of China Diclofenac Sodium following under Custom Heading 2942
20. Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 31st October, 2001.
21. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act, *supra*.

L.V. SAPTHARISHI, Designated Authority